दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र
विज्ञापन के लिए केन्द्रीय सरकार व राज्यों द्वारा स्वीकृत

हिमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 56 ❑ अंक-19 ❑ दिल्ली ❑ जुलाई, 2018 (द्वितीय) ❑ मूल्य : 2 रु.

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, गुजरात का प्रादेशिक सम्मेलन सम्पन्न

दलितों को दलित प्रतीकों की राजनीति नहीं, समता-सत्ता के संवैधानिक अधिकार चाहिएं

– डॉ. सुमनाक्षर

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, गुजरात प्रदेश शाखा का अपना प्रादेशिक सम्मेलन 1 जुलाई, 2018 को डा. अम्बेडकर मेमोरियल हाल, सरसपुर, अहमदाबाद (गुजरात) में सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। बाबा साहब डा. अम्बेडकर की 127वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित इस सम्मेलन में अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर मुख्य अतिथि थे। मुम्बई हाईकोर्ट के पूर्व जस्टिस मा. वी.एच. भैरविया ने समारोह की अध्यक्षता की। इस सम्मेलन में अकादमी के राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष प्रो. स्वामी आत्माराम उपाध्याय, तेलगांना प्रदेश के अध्यक्ष एडवोकेट जितेन्द्र 'मनु', हरियाणा प्रदेश के उपाध्यक्ष मा. गुरदयाल सिंह मोरथला, अकादमी की दक्षिण भारत राज्य समिति के महासचिव बाबू जार्ज वटोली (केरल) विशिष्ट अतिथि थे। अकादमी के राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. जय सुमनाक्षर और विधायक मा. हिम्मत सिंह पटेल ने भी विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मेलन की शोभा बढ़ाई।

सम्मेलन का शुभारम्भ मुख्य अतिथि डा. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा बाबा साहब डा. अम्बेडकर के चित्र पद माल्यार्पण तथा दीप प्रज्ज्वलित करके किया। भीम वन्दना के बाद अकादमी की गुजरात राज्य शाखा के अध्यक्ष श्री जयवंत जडेजा ने सम्मेलन में आये सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने प्रदेश में अकादमी द्वारा किये जा रहे दलितोत्थान कार्यों से अवगत कराया। अकादमी के प्रदेश महामंत्री श्री मंगल सूरजकर तथा श्री के.जी. सोरठिया ने फूल माला पहनाकर और शाल उढ़ाकर माननीय अतिथियों का अभिनन्दन किया।

सम्मेलन के कार्यक्रम का प्रारम्भ मुख्य अतिथि भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर के उद्‌बोधन से हुआ। उन्होंने सबसे पहले इस सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए गुजरात प्रदेश अकादमी के अध्यक्ष मा. जयवंत जडेजा तथा उनके समस्त पदाधिकारियों को बधाई दी जो बाबा साहब डा. अम्बेडकर के समतावादी मिशन को आगे ले जाते हुए सामाजिक न्याय की मशाल को और तेजी से प्रज्ज्वलित कर रहे हैं।

अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर ने कहा कि गुजरात ने देश को प्रधानमंत्री के रूप में मा. नरेन्द्र मोदी को दिया, जिन्होंने 2014 के लोकसभा चुनाव में मोदी जी के 'गुजरात मॉडल' तथा 'मोदी चाय वाला' का खूब बखान किया। लोगों ने उनके लोक लुभावने भाषण, अच्छे दिन आने का आश्वासन, गरीबी, बेरोजगारी, अन्याय, अत्याचार मिटाने का भरोसा, सामाजिक समता और पारस्परिक भाईचारा को बढ़ावा और धार्मिक उन्माद को जड़मूल से खात्मा करने के वादे पर यकीन करके उन्हें सहयोग दिया, वोट दिया और उनकी भाजपा के 'कमल' को दो तिहाई मत से भी अधिक सीटों से जिताया और नरेन्द्र मोदी जी को देश के प्रधानमंत्री के रूप में दिल्ली की गद्दी पर बैठाया और आशा की कि अब नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री के रूप में देश का कायाकल्प करेंगे। पहला साल बिता, फिर नोटबन्दी हो गई–अपनी ही गाढ़ी कमाई के रूपयों को नई मुद्रा में बदलवाने के लिए देश की गरीब जनता को पूरे दिन भूखे–प्यासे बैंकों के सामने धक्के–मुक्के खाते हुए भी लाईनों में लगना पड़ा। नोटबन्दी की इस मुसीबत से निकालने के लिए प्रधानमंत्री ने सिर्फ 50 दिन का समय मांगा था, पर दूसरा–तीसरा साल बीतने पर भी देश की आर्थिक व सामाजिक स्थिति और बिगड़ती गई। नोटबन्दी के कारण कल–कारखाने बन्द हो गये, प्रापर्टी और भवन निर्माण का काम ठप्प पड़ गया, छोटे कामधन्धे बन्द हो गये। उसका दुष्परिणाम यह निकला कि अधिकांश लोग बेकार, रोजगार हो गये, और घर में 'नोटबंदी' से पहले जो चुल्हा हर रोज आसानी से जलता था, अब उस पर दो जून की रोटी सेकना भी मुश्किल हो गया। इसके बाद टैक्सों में एकरूपता लाने के लिए 'जी.एस.टी.' लागू कर दिया। इसने भी छोटे कारोबारियों की आर्थिक रूप से कमर तोड़ दी। 'जी.एस.टी.' के चक्कर में खाने–पाने व जीवनयापन की सभी चीजें महंगी हो गई। दवाइयां, पढ़ाई की चीजें, पेट्रोल, गैस चूल्हे का सिलेंडर, बिजली, बस व रेलों की यात्रा सब महंगी हो गई। लोगों का महंगाई, भुखमरी, बेरोजगारी से ध्यान बटाने के लिए–गौरक्षा के नाम पर साम्प्रदायिक दंगे शुरू करा दिये गये। हिन्दू–मुस्लिम–दलितों के बीच घृणा, नफरत, भेदभाव की दीवारें खड़े करने के लिए हत्या, आगजनी, मारकाट को

(शेष पृष्ठ 3 पर)

सम्पादकीय

जिस घाट पर पानी पीने से अपमान प्यास का होता हो....

राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द देश के सर्वोच्च पद पर आसीन है। वह भारतीय संविधान के रक्षक हैं और देश की तीनों सेनाओं के सर्वोच्च कमान्डर हैं। देश के सर्वोच्च न्यायालय के वे संरक्षक हैं। उनके दलित जाति से होने के कारण वह दलितों की शान बान आन हैं। ऐसे महापुरुष के नाम के साथ दलितों का मान–सम्मान जुड़ा है। अगर दलित होने के नाते कहीं भी उनका अपमान व तिरस्कार होता है तो समग्र दलित समाज को उससे ठेस पहुंचना स्वाभाविक है।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद 14 मई, 2018 को ब्रह्मा जी के मन्दिर पुष्कर में दर्शनार्थ पहुंचे थे। वहां दलित होने के नाते उन्हें ब्राह्मण पुजारियों ने ब्रह्माजी के मन्दिर में घुसने नहीं दिया। इसके बाद उन्होंने मन्दिर के बाहर सीढ़ियों पर बैठकर पत्नी श्रीमती सविता कोविन्द व पुत्री स्वाति के साथ पूजा–अर्चना की। राष्ट्रपति का इस तरह उन सीढ़ियों पर बैठकर पूजा–अर्चना कराना, जहां मन्दिर में दर्शनार्थ आये लोगों के जूते–चप्पल उतारे जाते हैं, देश के करोड़ों दलितों व शोषितों के सम्मान को गहरा आघात पहुंचा है और स्वाभिमान को ठेस पहुंची है। मन्दिर के बाहर जूते–चप्पल रखे जाने वाली सीढ़ियों पर बैठकर राष्ट्रपति सपरिवार पूजा करे यह पद प्रतिष्ठा, गौरव, गरिमा, भारतीय संविधान और बहुजन समाज का अपमान है।

इससे पूर्व 12 मार्च, 2018 को जब राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद व उनकी पत्नी सविता कोविन्द पुरी के जगन्नाथ मन्दिर में भगवान जगन्नाथ के दर्शन करने गये थे तब वहां भी राष्ट्रपति जी के दलित जाति का होने के कारण ब्राह्मण पुजारियों ने मन्दिर में धक्का मुक्की की और अपमानित करके उन्हें मन्दिर से बाहर धकेल दिया। किसी सामान्य दलित के साथ ऐसी अपमानजनक घटना घटे तो कोई बड़ी बात नहीं, पर देश के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद पर आसीन व्यक्ति के साथ ऐसी अपमानजनक घटना घटे तो यह पूरे देश के लिए शर्म की बात है। देश के राजनेता, समाज सुधारक, धार्मिक मठाधीश, साहित्यकार, पत्रकार, राष्ट्रपति के साथ घटी इन अपमानजनक घटनाओं पर मौन हैं। क्या यह धार्मिक भेदभाव व वर्णव्यवस्था जनित जातिवादी दुर्व्यवहार भारतीय संविधान की अवहेलना नहीं है? मन्दिरों में जाकर भगवान के दर्शन करके पूजा अर्चना करना राष्ट्रपति कोविन्द जी का यह व्यक्तिगत मामला हो, पर देश का राष्ट्रपति बनने पर उनका मान सम्मान, देश व उसके सभी नागरिकों के मान सम्मान से जुड़ा है। इसलिए मन्दिर के पण्डे–पुजारियों द्वारा उनके साथ किया अपमान पूरे देश का अपमान है और उस दलित जाति के लोगों के स्वाभिमान का अपमान है।

माननीय रामनाथ कोविंद जी भले ही भाग्य, भगवान में विश्वास रखते हों और उनको मिला राष्ट्रपति पद भगवान की कृपा से मिला मानते हों, पर वे इस सच्चाई को नहीं झुठला सकते कि उन्हें यह राष्ट्रपति पद बाबा साहब डा. अम्बेडकर जी के भारतीय संविधान में दिये प्रावधान के कारण मिला है। वह इससे पहले वकील, सांसद व राज्यपाल भी भारतीय संविधान के प्रावधानों के कारण बने थे।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने मनुवादियों के साथ संघर्ष कर जहां हजारों दलितों को नासिक के कालाराम मन्दिर में प्रवेश कराया था, वहीं भारत के राष्ट्रपति ने ब्रह्माजी के पुष्कर मन्दिर के बाहर सीढ़ियों पर बैठकर पूजा करके बाबा साहब डा. अम्बेडकर की समतावादी विचारधारा का तिरस्कार किया है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	80/-
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	50/-
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/-
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/-
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	60/-
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	40/-
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/-
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	80/-
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/-
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/-
डा. अम्बेडकर भजनावली	राजमल 'राज'	25/-
हमारे दलित गौरव	राजमल 'राज'	25/-
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	25/-
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	50/-
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	80/-
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/-
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/-
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/-
सृजन के कण	जीपी पचौरिया 'दीप'	150/-
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/-
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/-
सत्सम दर्शन	राजमल 'राज'	100/-
जागा मेहनतकश इंसान	राजमल 'राज'	50/-
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	60/-
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	50/-
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	100/-

पुस्तक मंगाने के लिए मनीआर्डर से राशि अग्रिम भेजें, व्यवस्थापक,

दलित साहित्य सेन्टर

(भारतीय दलित साहित्य अकादमी)

बी–3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन–1, दिल्ली–9

फोन : 27421449, 27421460, मो. 9810278936

सामाजिक क्रांति की अग्रदूत : सावित्रीबाई फुले

• प्रो. डॉ. पंडित बन्ने

भारत की प्रथम महिला शिक्षिका एवं क्रांतिकारक सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी, 1831 को महाराष्ट्र के सातारा जिले के नायगांव में हुआ। स्त्री एवं दलित समाज को मुख्य प्रवाह में लाने के लिए उन्होंने आजीवन संघर्ष किया। सावित्रीबाई फुले श्रेष्ठ अध्यापिका, उत्कृष्ट वक्ता एवं कुशल प्रशासिका थी। महात्मा फुले जी के कंधे से कंधा मिलाकर सामाजिक रूढ़ियों एवं बंधनों को तोड़ने में अग्रसर थीं। महात्मा फुले का मानना था कि स्त्रियों के लिए शिक्षा के द्वार खुल जाएं तो वे स्वयं इन बंदिशों को तोड़ सकेंगी। दलित एवं शोषित समाज को अपने ऊपर होने वाले अत्याचार का एहसास होगा। इसी उद्देश्य से उन्होंने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को पढ़ाया। यह भारतीय स्त्री शिक्षा का पहला प्रयोग था। यहीं से सावित्रीबाई स्त्री–शिक्षा की पक्षधर बनकर भारतीय स्त्री के उद्धार कार्य में जुट जाती हैं। अगस्त, 1848 में पूना के बुधवार पेठ में स्थित भिड़े वाड़ा में भारत की प्रथम कन्याशाला का प्रारंभ हुआ और सावित्रीबाई इस प्रथम कन्याशाला एवं भारत की प्रथम अध्यापिका बनी। कट्टरपंथियों ने फुले दंपति को हिन्दू धर्म विरोधी एवं समाज विरोधी घोषित 1848 से 1852 तक 18 स्कूल खोले जाने का उल्लेख मिलता है, जिनमें ओतूर, हडपसर, सासवड, नायगांव, शिरवल, तलेगांव, शिरूर, अंजीरवाड़ी, मिंगाद, मुढ़वे, चिपलूणकरवाड़ी पुणे, नाना पेठ, रास्ता पेठ, वेताल पेठ, महारवाड़ा, भिडेवाड़ा आदि महत्वपूर्ण हैं।

शूद्र, अछूत और नारी वर्ग सदियों तक शिक्षा से वंचित रहे। विद्या न मिलने से अनर्थ को जोतिबा फुले ने शब्दबद्ध किया है–

''विद्या बिना मति गई,
मति बिना गति गई।
मति बिना नीति गई,
नीति बिना वित्त गया
विद्या बिना इतना अनर्थ हुआ।''

ज्ञान की प्राप्ति बिना किसी भी समूह–वर्ग का प्रगति की ओर उन्मुख मार्ग ढूंढ़ना संभव नहीं। अपने भले–बुरे विवेकपूर्ण निर्णय तक करने की क्षमता भी वे खो देते हैं, अंधविश्वास के मायावी जाल में फंसते चले जाते हैं। विद्या के महत्व को समझने के कारण ज्योतिबा जी ने सावित्रीबाई को स्वयं शिक्षित किया। सावित्रीबाई द्वारा लड़कियों के लिए पाठशाला खोलना और पढ़ाना युगांतकारी एवं क्रांतिकारी घटना थी।

सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक **आदर से सिर झुक जाता**
उसे प्रणाम करना मुझे सुहाता।''

वह धार्मिक अंधविश्वास, रुढ़ियों और आडंबर को पोल खोलकर उनका मजाक बनाते हुए उस पर व्यंग्य करती हैं। अंधविश्वास और रूढ़ियों का वह विरोध करती हैं क्योंकि प्रगति के मार्ग पर वे बाधा बनती है।

सावित्रीबाई अपनी 'मन्नत' कविता में कहती है–

पत्थर को सिंदूर लगाकर
और तेल में डुबोकर
जिसे समझा जाता है देवता
वह असल में होता है पत्थर।

पत्थर से मन्नत मांगकर पुत्र प्राप्त करने की प्रवृत्ति को वह अवैज्ञानिकता बताती हैं। वह कहती है–

''यदि पत्थर पूजने से होते बच्चे
तो फिर नाहक
नर–नारी शादी क्यों रचाते?''

खेती विश्व की आधारशिला है जिसे मिथ्या कहा। उसी खेती को सावित्रीबाई 'ब्रह्म' कहती हैं। खेत सत्य है और वह ब्रह्म हैं। जीने के लिए खेती होनी चाहिए। यह जीवन का सत्य है। खेती नाम का ब्रह्म अन्न देता है, जीवन देता है। 'मनु कहे कुटिल' कविता में खेती के बारे में मनु का मंतव्य दिया है। सावित्रीबाई लिखती है–

हल जो चलावे, खेती जो करें
वे मूर्ख होते हैं ऐसा कहे मनु
शूद्रों का जन्म में चुकाते सभी शूद्र।

मनु के इस मानव विरोधी विचारों को और समाज के ऐसे कुटिल, रीति, रिवाज को सावित्रीबाई ने 'धूर्तों की अमानवीय नीति' कहकर उस पर कड़ा प्रहार किया है।

सन् 1887 में समग्र महाराष्ट्र में प्लेग की बीमारी फैलती है। इसमें पीड़ित जनता की सेवा में सावित्रीबाई एवं पुत्र यशवंत दिन–रात जुटे रहते हैं। ऐसे में एक दलित बच्चे को बीमारी से बचाने हेतु सावित्रीबाई उसे कंधे पर लादकर ले आयी, जिसमें प्लेग की बीमारी उन्हें भी लग गई। उसी से 10 मार्च, 1897 में उनकी मृत्यु हुई।

सावित्रीबाई के संदर्भ में ऋषितुल्य मामा परमानंद लिखते हैं–''जोतिराव से अधिक उनकी पत्नी सावित्रीबाई की जितनी सराहना की जाए कम है। उन्होंने अपने पति को संपूर्ण सहयोग दिया। उनके साथ रहकर मुसीबतों का डटकर सामना किया, कष्ट तथा यातनाएं सही।''

उपर्युक्त विवेचन विश्लेषण के पश्चात यह स्पष्ट होता है कि सावित्रीबाई फुले के जीवन संघर्ष, कार्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, सामाजिक बदलाव हेतु, निरंतर प्रयास का चित्रण है। सावित्रीबाई श्रेष्ठ अध्यापिका, उत्कृष्ट वक्ता एवं कुशल प्रशासिका थी। अपने पति के समाजसुधार आंदोलन की सक्रिय कार्यकर्ता थी। स्त्री–अधिकार, जागृति, शिक्षा, आत्मसम्मान एवं मानवता के लिए संघर्ष किया। सावित्रीबाई ने अपना समग्र जीवन युगों–युगों की दासता को तोड़ने के लिए उत्सर्ग किया।

उसने 19वीं सदी में छुआछूत, बालविवाह तथा विधवा–विवाह निषेध जैसी कुरीतियों के विरुद्ध अपने पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। वह अपने त्याग, समर्पण, सेवाभाव और हिम्मत जैसे गुणों से आज भी हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। समाज में सुख–शांति तथा समता स्थापित करने के लिए वह हम सबको प्रेरित करती है।

हिमायती
हिन्दी पाक्षिक पत्र
पढ़ें और आगे बढ़ें।

किया। उनकी नजर में स्त्रियों को शिक्षा देना सबसे बड़ा पाप था। धर्म के अनुसार स्त्री एवं शूद्र को पढ़ाना धर्म भ्रष्ट करना है। कट्टरपंथी कहने लगे–'महिलाएं बड़ी दुष्ट, चंचल और अविचारशील होती हैं। उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। यदि महिला को पढ़ाया जाए तो वह कुमार्ग पर चलेगी, घर का सुख चैन धूल में मिला देगी।'' सावित्रीबाई ने समाज की गंदी परंपरा एवं षड्यंत्र को तोड़ने का कार्य शुरू किया था।

हजारों वर्षों की परंपरा का अंत करना आसान नहीं था। अपनी धर्म सत्ता को बचाने का प्रयास तथाकथित समाज द्वारा शुरू हुआ। अब सावित्रीबाई पर पत्थर एवं गोबर बरसने लगे। दुष्ट शक्तियों द्वारा हर दिन नए पैंतरे इस्तेमाल होने लगे, लेकिन सावित्रीबाई हर पैंतरे का हल निकालने लगी। अपने मन में कोई कटुता न रखते हुए वे सतानेवालों को प्रेम से कहती है–''मैं अपना कर्तव्य कर रही हूं। ईश्वर तुम्हें क्षमा करे। तुम्हारा भला करें।''

सावित्रीबाई संघर्ष करते हुए अपना सामाजिक दायितव निभाती रही हैं। उनकी प्रथम पाठशाला में अन्नपूर्णा जोशी, सुमती मोकाशी, दुर्गा देशमुख, माधवी थत्ते, सोनू पवार, तानी करडिले यह छह लड़कियां प्रवेश लेती हैं। आगे चलकर इनकी संख्या 48 तक पहुंचती है। सावित्रीबाई फुले के अतुलनीय योगदान के फलस्वरूप स्थितियों में लड़कियों का शिक्षित करने का श्रेय स्त्री मुक्ति की पहली नेता सावित्रीबाई को जाता है। पुरुषसत्ता द्वारा विवाह संस्था में स्त्री को मात्र गुलाम समझकर पुनरुत्थापन की मशीन मानने की सोच को पूर्णतः नकारकर स्त्री को अस्मिता और गरिमा के साथ जीने का अधिकार दिलाया। बाल विधवाश्रम और पालनाघर खोलकर गर्भवती बाल विधवाओं को आत्महत्याओं से परावृत्त करके उनकी और उनके बच्चों की देखभाल का कार्य सावित्रीबाई ने उनकी माता बनकर किया। इन्हीं बच्चों में से यशवंत को गोद लिया जो बड़ा होकर डॉक्टर बना।

सावित्रीबाई फुले प्रतिभा संपन्न कवयित्री थी। स्त्री विमर्श का प्रथम उद्‌गार उनकी कविता में व्यक्त हुआ। शूद्र अतिशूद्र और आदिवासी समाज में स्त्रियां बहुत बहादुर और जुझारू होती हैं। वह किसी भी कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानती हैं। महारानी छत्रपति ताराबाई ऐसी ही एक बहादुर योद्धा थीं। उनको लड़ाकू वीरांगना की पदवी देते हुए सावित्रीबाई फुले उन्हें शत्रु मर्दिनी, शेर की तरह दहाड़ने वाली, बिजली से भी अधिक फुर्तीली बताती है और उनको अपना प्रेरणास्रोत मानती हैं। सावित्रीबाई कहती है–

''महारानी ताराबाई लड़ाकू वीरांगना
रणभूमि में रणचंडिका तूफानी
युद्ध भूमि में युद्ध की प्रेरणास्रोत

महाड़ सत्याग्रह–सामाजिक सशक्तिकरण हेतु क्रांतिकारी पहल

• सूरज कुमार बौद्ध

भारत में जब से आर्यों ने अपना शासन स्थापित किया तब से शूद्रों पर अत्याचार जारी रखा। हिन्दू आर्यों ने शूद्रों पर अत्याचार की सारी हदें पार कर दी थीं। अगर हम आधुनिक काल की भी बात करें तो भी शूद्रों को तालाब में पानी पीने की इजाजत नहीं थी। जबकि अगस्त 1923 को बॉम्बे लेजिस्लेटिव कौंसिल के द्वारा एक प्रस्ताव लाया गया, कि वो सभी जगह जिनका निर्माण और देखरेख सरकार करती है, ऐसी जगहों का इस्तेमाल हर कोई कर सकता है। इस प्रस्ताव को जनवरी 1924 में उस अधिनियम को नगर निगम परिषद के द्वारा लागू किया गया।

1924 में यह बिल पास तो हो चुका था कि किसी भी सार्वजनिक तालाब में देश के सभी नागरिकों को पानी पीने का अधिकार है लेकिन हिंदुओं ने शूद्रों को पानी पीने की इजाजत नहीं दी। लोग भूख प्यास से तड़प–तड़प मरते रहे लेकिन निर्दयी ठेकेदारों का पत्थर दिल नहीं पिघला। बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर से यह बर्दाश्त नहीं हुआ। उनकी आंखों के सामने शूद्र समाज का अपमान किया जा रहा था। अब बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर इसके खिलाफ एक बड़े आंदोलन का आगाज करते हैं और वह आंदोलन था महाड़ सत्याग्रह, दिन 20 मार्च, 1927 का।

<u>महार सत्याग्रह और हमारा हक</u>

भीमराव अम्बेडकर ने सभी शूद्र व अछूत समाज से अपील की कि सभी लोग 20 मार्च, 1927 को महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के महाड़ स्थान पर एकत्रित हों। भीमराव अम्बेडकर लोगों की नजर में इतने बड़े उम्मीद थे कि उनकी एक आवाज पर पूरा समाज उमड़ पड़ता था। उनका आह्‌वान सुनते ही 20 मार्च, 1927 को महाड़ हजारों लोगों की भीड़ से भर गया। महाड़ के सार्वजनिक चावदार तालाब से पानी पीकर यह सिद्ध करना था कि अब अछूत समाज ने छुआछूत के इस महल का विध्वंस करने का ठान लिया है। इस सत्याग्रह में हजारों की संख्या में अछूत शामिल हुए। जैसे ही बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर लोगों के साथ पानी पीने को आगे बढ़े तो पूरा वातावरण लोगों द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जय जयकारों से गूंज उठा। सभी लोग महाड़ के चवदार तालाब पहुंचे और बाबा साहब अम्बेडकर ने अपने दोनों हाथों से उस तालाब का पानी पिया। फिर उनका अनुकरण करते हुए हजारों सत्याग्रहियों ने भी तालाब से पानी पिया। अब सभी हिंदू जाति समूहों एवं अन्य धर्म के लोग मुस्लिम, ईसाई तक भी उस तालाब का पानी पी सकते थे क्योंकि महाड़ सत्याग्रह ने अब यह सुनिश्चित कर दिया था कि सार्वजनिक तालाब पर सबका समान हक होता है। और इस तरह वर्णवादी असमानता के विरोध में बाबा साहब ने सार्वजनिक व प्रभावकारी क्रान्ति की पहली शुरुआत की। महाड़ सत्याग्रह की महत्ता बाबा साहब के इसी कथन से लगाई जा सकती है कि महार सत्याग्रह केवल पानी के लिए नहीं था बल्कि मानवाधिकार को स्थापित करने के लिए था।

क्या शूद्र व अछूत हिन्दू हैं?

हिंदुओं द्वारा अछूतों को तालाब का पानी पीने के अधिकार से नकारा गया था, जबकि सवर्ण हिंदू शूद्रों को हिंदू धर्म का हिस्सा मानते थे। लेकिन बात कुछ और ही थी। दरअसल हिंदुओं ने अछूतों को कभी हिन्दू धर्म का हिस्सा माना ही नहीं। चूंकि उन्हें गुलामों की, नौकरों की, मजदूरों की जरूरत थी और सबसे बड़ी बात की कभी यहां का मूल निवासी शूद्र समाज विद्रोह न कर दे। अतः उन्हें धर्म की चाशनी में डुबोए रखना जरूरी था। इसलिए हिंदुओं ने शूद्रों को भी हिन्दू करार दिया ताकि उनकी सत्ता, सर्वोच्चता और सिंहासन बना रहे। 20 मार्च, 1927 के इस महाड़ सत्याग्रह ने क्रांतिकारी परिवर्तन को जन्म दिया।•

पृष्ठ 1 का शेष....दलितों को दलित प्रतीकों की राजनीति नहीं, समता-सत्ता के संवैधानिक अधिकार चाहिएं

बढ़ावा दिया गया। मोदी जी के शासन के गत चार सालों में देश का वातावरण विषाक्त ही नहीं हुआ, अपितु डरावना हो गया है। हिन्दूवादी साम्प्रदायिक संगठनों के सामने लगता है जैसे मोदी सरकार ने हथियार डाल दिये हों और मुस्लिम, दलित व अल्पसंख्यकों पर अत्याचार करने का 'लाइसेंस' उन्हें दे दिया हो।

डा. सुमनाक्षर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने चुनावी भाषण में वायदा किया था कि वह प्रधानमंत्री बनने के 50 दिनों के अन्दर विदेशों में भारत का जमा 'काला धन' वापस लायेंगे और प्रत्येक नागरिक के बैंक खाते में 15–15 लाख रुपया जमा करायेंगे। उन्होंने कहा था कि वे प्रत्येक वर्ष 2 करोड़ लोगों को रोजगार देंगे और भ्रष्टाचार पर लगाम लगाकर भ्रष्टाचारियों को जेल भिजवायेंगे।

इसके बाद डा. सुमनाक्षर ने श्रोताओं से पूछा कि क्या विदेशों से देश का काला धन वापिस आया? नहीं। क्या प्रत्येक नागरिक के बैंक खाते में 15–15 लाख रुपये जमा हुए? नहीं। क्या हर साल 2 करोड़ बेरोजगारों को रोजगार मिला? नहीं। क्या महंगाई खत्म हुई? नहीं। क्या भ्रष्टाचार खत्म हुआ? नहीं, क्या किसी की भ्रष्टाचारियों को जेल में भिजवाया गया? नहीं।

डा. सुमनाक्षर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के उपरोक्त सभी वायदे झूठे साबित हुए हैं। देश में भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, अराजकता तो पहले से कई गुना ज्यादा बढ़ी है और विदेशों में जमा देश का काला धन बढ़कर दुगुना हो गया है।

डा. सुमनाक्षर ने कहा कि मा. नरेन्द्र मोदी को 'चायवाला' हम बिरादरी, पिछड़ा गरीब समझकर छत फाड़कर वोट दिये थे और 'मोदी के गुजरात मॉडल' के समान भारत को समुन्नत व सर्वोच्चता सम्पन्न मॉडल बनाने के सुनहरे सपने के झांसे में आकर देश के दलितों ने पहली बार लीक से हटकर अपने ताबड़तोड़ वोट दिये थे, पर उन्हें क्या पता था कि उनका 'गुजरात मॉडल' दलितों के लिए 'कसाईघर' बन जायेगा। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनते ही गुजरात के ऊना में पांच दलित युवाओं को गोहत्या के नाम पर बेरहमी से पीट–पीटकर अधमरा कर दिया गया, जबकि वे तो मरी गाय का चमड़ा उतार रहे थे और मरी गाय भी सवर्ण जाति के लोगों की थी। ऊना की इस बर्बरता भरी अमानवीय घटना की याद अभी धूमिल नहीं हुई थी कि भावनगर जिले में ढीवा गांव में घुड़सवारी के शौक के कारण 21 वर्षीय एक दलित युवक की हत्या कर दी गई। अहमदाबाद (गुजरात) जिले के बलथरा गांव के एक स्कूल में दलित महिला (आंगनबाड़ी वर्कर) पल्लवीबेन को कुर्सी पर बैठने पर गांव के उच्च जाति के जयराम व उसके तीन साथियों ने उस पर हमला किया और उसके घर पर तोड़फोड़ की और उसका मंगलसूत्र भी लूट ले गये। नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने पर धार्मिक साम्प्रदायिकता उभार पर है, जात–पांत, भेदभाव और वर्ण व्यवस्था का जहर अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया है। कहीं दलितों को मूंछें रखने पर मारा–पीटा जाता है, कहीं दलितों के सिंह लगे नामों के कारण उन पर हमले किये जाते हैं, कहीं उनके साफ सुथरे पहनावे पर कटाक्ष करते हुए उन्हें मारा–पीटा जाता है। ऊंची जाति के दबंगों का दलितों की महिलाओं के साथ छेड़छाड़, अत्याचार, बलात्कार करना जैसे उनका अधिकार बन गया है। थाना, कोर्ट कचेहरी में उन दबंगों के खिलाफ कोई सुनवाई नहीं अगर मोदी जी का यही 'गुजरात मॉडल' है तो ऐसा 'कसाईघर' वाला मॉडल हमें नहीं चाहिए।

डा. सुमनाक्षर ने कहा कि इतने अत्याचार व बर्बरता होने पर न प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शर्मसार है और न ही उनकी भाजपा के अध्यक्ष अमित शाह। वे दलितों को बचाने व समता–सम्मान देने की बजाय वे दलितों के घरों में खाना खाने का नाटक कर रहे हैं जिससे दलितों का दरकता 'वोट बैंक' उनकी झोली से खिसक न जाये। उन्हें तनिक भी दलितों के अधिकारों की पूर्ति की परवाह है और न ही दलितों को सवर्णों के अत्याचारों से बचाने के लिए एस.सी./एस.टी. कानून को सबल करने की जिसे सुप्रीम कोर्ट ने 'अपंग' बना दिया है। उनको न तो दलितों के 'आरक्षण कोटा' पूरा करने में कोई दिलचस्पी है और न दलितोत्थान के लिए आंवटित 'कम्पोनेंट प्लान' की धनराशि खर्च करने की इच्छा। प्रधानमंत्री मोदी और उनकी भाजपा सरकार सिर्फ दलितों के प्रतीकों की राजनीति कर रही है। वह देश में बाबा साहब डा. अम्बेडकर के पांच स्मारक स्थलों के निर्माण का और विदेशों में भगवान बुद्ध के नाम को लेकर राजनीति करते हैं। वह न तो बाबा साहब डा. अम्बेडकर के मिशन के लिए, न ही भगवान बुद्ध की धरोहर और उनके अनुयायियों के लिए कुछ ठोस कार्य करना चाहते हैं। प्रतीकों की राजनीति से देश का दलित अब प्रभावित व भ्रमित होने वाला नहीं है। वह देश में अपने संवैधानिक अधिकारों के अलावा अन्य किसी 'लोलीपोप' से खुश होने वाला नहीं है। आज मोदी जी की सरकार में जिस तरह से धार्मिक उन्माद, वर्ण व्यवस्था, जात–पांत, धार्मिक पाखंड, धर्मग्रंथों व साधु सन्तों की प्रतिष्ठा को बढ़ावा दिया जा रहा है, वह किसी से छिपा नहीं है। स्वयं मोदी जी 'मानव–सेवा' की जगह मन्दिर की मूर्तियों की सेवा लगे दिखाई देते हैं। ऐसे में अब उनसे दलितों की भलाई, विकास, कल्याण, उन्नति की आशा करना बेकार है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व भाजपा की कार्य–प्रणाली भी यह दर्शाती है कि वह दलित प्रतीकों का गुणगान करके उन्हें भ्रमा दें, भले ही उनके वाजिब 'हक' उन्हें न दें। वरना क्या कारण है कि भाजपा शासित प्रदेशों में कोई दलित मुख्यमंत्री नहीं है, राज्यों में भाजपा सरकार द्वारा मनोनीत कोई भी दलित राज्यपाल नहीं है, देश के विश्वविद्यालयों में भाजपा सरकार द्वारा एक भी दलित कुलपति नियुक्त नहीं किया गया। राज्यसभा में भाजपा सरकार ने एक भी दलित व्यक्ति को मनोनीत करके नहीं भेजा। इससे साफ जाहिर है कि उसे दलितों के वोट लेने की तो उत्सुकता है, पर वास्तव में वह उन्हें सशक्त बनाने के लिए उनके संवैधानिक अधिकार देने के लिए तैयार नहीं और न ही दलितों को देश की मूलधारा में जोड़ने की उनकी कोई दिलचस्पी है। उनकी तो यही सोच है कि दलित हिन्दू के दायरे में बने रहें और मनुस्मृति की ब्राह्मणवादी वर्ण व्यवस्था में उत्पीड़न और गुलामी झेलते रहें और कभी भी बाबा साहब डा. अम्बेडकर के समता, स्वतंत्रता, बंधुता और न्याय पर आधारित भारतीय संविधान की बात न करें। अब हम और आप यानि देश के दलितों को सोचना है कि उनके लिए कल्याणकारी रास्ता क्या

सम्पादकीय का शेष.....जिस घाट पर पानी पीने से अपमान प्यास का होता हो.....

बाबा साहब डा. अम्बेडकर शुरू से ही मन्दिरों में जाकर पूजा करने के खिलाफ थे। नासिक के कालाराम मन्दिर में दलितों का प्रवेश कराने का उनका मकसद सवर्णों की तरह दलितों को भी मन्दिर प्रवेश में बराबर का अधिकार दिलाना था। वे हमेशा कहते थे कि दलितों को पंडों–पुजारी के मन्दिरों में नहीं बल्कि विद्या मन्दिरो में जाना चाहिए।

बाबा साहब डा. अम्बेडकर की पत्नी रमाबाई थी। उसने अनेक दुख–दर्द सहकर भी बाबा साहब डा. अम्बेडकर को आगे बढ़ने के लिए हर तरह का सहयोग दिया था। श्रीमती रमाबाई ने सारे जीवन बाबा साहब से कुछ नहीं मांगा, पर उसकी इच्छा थी कि वे उसे एक बार महाराष्ट्र के पंढरपुर के विट्ठल बाबा के मंदिर के दर्शन करा दें। बाबा साहब ने विनम्रता से कहा– ''रमाबाई, विट्ठल बाबा के मन्दिर जाकर तुम पछताओगी। वहां शूद्रों को मन्दिर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता है। इसलिए तुम्हारा वहां जाना उचित नहीं है।'' बाबा साहब की यह बात सुनकर रमाबाई ने विट्ठल बाबा के मन्दिर जाने की जिद सदा के लिये छोड़ दी। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद जी की मन्दिर में भगवान की पूजा करने की जिद ने जहां दलितों के स्वाभिमान को ठोस पहुंचाई है, वहीं हमारे कई ऐसे राजनेता हुए हैं जिन्होंने अपने पद के साथ–साथ दलितों की गरिमा को बढ़ाया।

ज्ञानी जैलसिंह जब भारत के राष्ट्रपति बने तो उनके मन में आया कि काशी (वाराणसी) में गुरू रविदास जी के जन्मस्थान मन्दिर के दर्शन किये जायें। उन्होंने कार्यक्रम बनाया और काशी पहुंच गये। वहां पहुंचने पर कलेक्टर ने उन्हें बताया कि गुरु रविदास जन्मस्थान मन्दिर का रास्ता बहुत टूटा–फूटा है। गड्ढ़ों से भरा हुआ है। इसलिए वहां अभी नहीं जाया जा सकता। इस पर राष्ट्रपति जैल सिंह ने पूछा कि गुरु रविदास मन्दिर तक जाने का रास्ता कितने दिनों में ठीक हो जायेगा। इस पर कलेक्टर ने बताया कि सर, मन्दिर तक सड़क बनाने में 6-7 दिन तो लग जायेंगे। इस पर राष्ट्रपति जैल सिंह जी ने कहा–''ठीक है आप मन्दिर तक की सड़क ठीक कराइये। मैं 6-7 दिन काशी में ही रूकूंगा। सड़क ठीक होने पर ही गुरु रविदास जी के मन्दिर में दर्शन करके ही दिल्ली लौटूंगा।'' ज्ञानी जैल सिंह जी एक सप्ताह काशी में ही रुके और मन्दिर तक सड़क बन जाने पर गुरु रविदास जी के मन्दिर में मत्था टेंक–पूजा करने के बाद चे दिल्ली लौटे। राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी के इस दृढ़ निश्चय और गुरू भक्ति भावना से दलित गुरुभक्तों का सिर गर्व से ऊंचा हो गया।

ऐसा ही–दूसरा उदाहरण उत्तर प्रदेश के राज्यपाल सूरजभान जी का है। लखनऊ विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में वह मुख्य अतिथि थे। उस समारोह में जाने से पहले उन्हें पता चला कि विश्वविद्यालय की सूची में गोल्ड–मेडल पाने वाले जिस दलित छात्र का नाम सबसे ऊपर था, उसका नाम उस सूची से हटा दिया गया है। उन्होंने दोनों सूचियों का मिलान किया तो सूचना सही थी। उन्होंने तुरन्त कुलपति से इस बावत पूछते हुए कहा कि जब तक अवार्ड सूची में उस दलित युवक का नाम दुरूस्त नहीं किया जायेगा, वे दीक्षांत समारोह में शामिल नहीं होंगे। समारोह के मुख्य अतिथि राज्यपाल जी से इस गलती के लिए कुलपति ने माफी मांगी और तुरन्त अवार्ड सूची को ठीक कराते हुए उस दलित छात्र का नाम सबसे ऊपर रखा। इसके बाद ही राज्यपाल सूरजभान जी लखनऊ विश्वविद्यालय के उस दीक्षांत समारोह में शामिल हुए और उस दलित छात्र को गोल्ड मेडल से नवाज कर बधाई दी। राज्यपाल सूरजभान जी की इस मिसाल ने दलितों के स्वाभिमान को चार चांद लगा दिये।

दलित साहित्यकार माता प्रसाद जी को अरूणाचल प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया। उन्होंने राज्यपाल पद पर रहते हुए दलित साहित्यकारों को तो अरूणाचल प्रदेश के राजभवन बुलाकर प्रोत्साहित किया ही, पूर्वोत्तर राज्यों की कौंसिल के अध्यक्ष के रूप में भी उन्होंने अपने काम व व्यवहार से लोगों को प्रभावित किया। देश में जब चुनावों के बाद सत्ता परिवर्तन हुआ तो केन्द्र की ओर से उन पर दबाव बनाया गया कि वे राज्यपाल पद से इस्तीफा दे दें। इस पर राज्यपाल माता प्रसाद जी ने कहा कि मुझे राज्यपाल राष्ट्रपति ने बनाया है, किसी के दबाव से मैं इस्तीफा नहीं दूंगा। उनके साहस और दृढ़ निश्चय के आगे जब दबाव ने काम नहीं किया तो केन्द्रीय सरकार ने उनकी जगह नये राज्यपाल की नियुक्ति कर दी। फिर खुशी से राज्यपाल पर से विदाई ले वे दिल्ली लौटे। अपनी दृढ़ता व साहस से उन्होंने दलित समाज को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसलिए आज भी वे दलितों के सिरमौर बने हुए हैं।

भाजपा ने रामनाथ कोविंद जी का नाम जब राष्ट्रपति पद के लिए प्रस्तावित किया था तो उसने उनके दलित होने का खूब प्रचार किया कि वे एक दलित को राष्ट्रपति बनाने जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी देश–विदेश मे इस बात का खूब प्रचार किया कि उनकी भाजपा ने दलित राष्ट्रपति बनाकर दलितों को सर्वोच्च पद से सुशोभित हुआ है। पर अब उसी दलित राष्ट्रपति का उन्हीं के हिन्दू मन्दिरों में राष्ट्रपति के दलित होने के कारण अपमान धक्का–मुक्की, तिरस्कार और बहिष्कार हो रहा है तो सभी भाजपा नेताओं के मुंह सिले हुए हैं और कोई इस विषय में बोलने के लिए तैयार नहीं। क्योंकि उनके बोलने व भर्त्सना करने से उनके मन्दिर ही बदनाम नहीं होंगे, बल्कि उनका हिन्दू संविधान मनुस्मृति की भी तौहीन होगी।

मा. रामनाथ कोविंद जी के राष्ट्रपति पद नियुक्त होने पर दलित, शोषित–बहुजन समाज में आशा जगी थी कि उनके राष्ट्रपति बन जाने से सदियों से ऊंच–नीच, असमानता, भेदभाव, रूढ़िवाद, अंधविश्वास के कारण यातना व उत्पीड़न झेल रहा समाज सुख की सांस लेगा और इनके नेतृत्व में गौरव व गरिमा प्राप्त करेगा। उन्नति व स्वाभिमान के साथ वे जी सकेंगे, वर्ण व्यवस्था व मनुवाद का खात्मा होगा। धार्मिक पाखंड खत्म होगा और समता, स्वतंत्रता, न्याय व भाईचारे के साथ वे जीवनयापन कर सकेंगे। पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द जी के धार्मिक व्यक्तिवाद से अब वे सब आशायें धूल–धसित हुई नजर आती हैं। हमारा कहना है–

जिस घाट पर पानी पीने से,
अपमान प्यास का होता हो।
उस घाट पर पानी पीने से,
प्यासा रह जाना अच्छा है।
– डा. सोहनपाल सुमनाक्षर

हे और आने वाले 2019 के लोकसभा चुनावों के लिए उनकी रणनीति क्या होगी, ताकि अब आगे आनेवाली हमारी नई पीढ़ी हम पर किसी तरह का दोषार्पण न कर सके। धन्यवाद। जय भारत–जयभीम–जय भारतीय संविधान।

सम्मेलन के समापन में दलित साहित्यकारों, लेखकों, पत्रकारों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को अपने–अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के फलस्वरूप बाबा साहब डा. अम्बेडकर के नाम पर भारतीय दलित साहित्य अकादमी की ओर शील्ड, शाल, प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय गीत–जन गण मन के साथ सम्मेलन का समापन हुआ। •

हिमायती
4 / जुलाई (द्वितीय), 2018 (कुल पृष्ठ 4)
पोस्टल डिस्पेच तिथि : 16-17 जुलाई, 2018

आर. एन. आई. नं. 40611/62
रजि. G-3/DL(N)/090/2018-2020
प्रकाशन तिथि : 14 जुलाई, 2018

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का सामाजिक न्याय दर्शन

• स्वदेश कुमार

सदियों पुरानी कहावत है कि होनहार विरवान के, होत चीकने पात। सन्तान को श्रेष्ठ बनाने में उसके मां–बाप की अहम् भूमिका होती है। एक छोटे से बच्चे का अन्य बच्चों के साथ खेलने के लिए मचलना और विवशता से भरी मां भीमाबाई द्वारा उसे यह कहकर गोद में उठाकर समझाना कि तू सूबेदार मेजर का बेटा होने के साथ–साथ, तुम महार भी हो, नन्हें बालपन पर कितनी गहरी चोट लगी होगी। यह जीवन का पहला झटका जो भीम के मन में उथल–पुथल मचाता है जिसे भीम ने छोटी उम्र में प्रश्नों की बजाय, उत्तर खोजने की तरफ मोड़ देता है। अन्य छात्रों, शिक्षकों के जूतों के पास बैठकर पढ़ने की शर्त पर स्कूल में प्रवेश करना, मां से विनती करना मेरा एडमीशन करा दो। मैं जूतों के पास बैठकर पढ़ लूंगा। यह पहला उत्तर था।

मां कहती है कि बेटा बहुत अपमान सहना होगा, बड़ी घृणा झेलनी पड़ेगी, किसी से लड़ना नहीं, केवल पढ़ना है। बिना पढ़े–लिखे कोई आदमी बड़ा नहीं बन सकता। जब तुम पढ़–लिखकर बड़े आदमी बन जाओ, तब समाज की इस गन्दी रीति को बदल डालना, यही मेरी प्रबल इच्छा है।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए बडौदा नरेश ने उन्हें छात्रवृत्ति देते समय, उनसे पूछा था कि तुम विदेश पढ़ने के लिए क्यों जाना चाहते हो? भीमराव ने उत्तर दिया कि अमेरिका और ब्रिटेन जाने का मेरा हेतु केवल उच्च शिक्षा प्राप्त करने तक सीमित नहीं है। जीवन में, मेरे अछूत शोषित भाई–बहनों का उत्थान करने के व्यापक हेतु की पूर्ति के लिए आवश्यक अर्हता प्राप्त करना ही विदेश जाने का उद्देश्य है। बाबा साहब ने कहा कि सयाजीवराव का जो वचन दिया था। वह मैंने पूरा किया। शपथ लेना तो सरल है, पर निभाना कठिन होता है। बाबा साहब ने 11 सितम्बर, 1938 में पूणे के अस्पृश्य विद्यार्थियों के 11वें सम्मेलन में कहा था कि कोई व्यक्ति जन्मजात हीरो नहीं होता। जब इंग्लैंड, में छात्र था तो मैंने सफलतापूर्वक अपना पाठयक्रम दो साल तीन महीने की निर्धारित अवधि में कर लिया, जबकि सामान्य रूप से इसे पूरा करने मे आठ साल लग जाते हैं। आज मेरी उम्र 40 के पार हो गयी है। लेकिन अब भी लगातार 18 घण्टे कार्य करता हूं। किन्तु आज के युवा यदि आधे घण्टे भी काम कर लेते हैं, तो उन्हें कुछ समय के लिए विश्राम की जरूरत होती है। वे सिगरेट पीयेंगे, लेट जायेंगे या अन्य प्रयोग ढूंढ़ेंगे। आपका स्वाध्याय व समर्पण मेरे जैसा होना चाहिए।

डा. अम्बेडकर का जीवन एक अविश्वसनीय आख्यान है। एक अस्पृश्य बालक ने बचपन से जवानी तक कदम–कदम पर अपमान, सभी विवशताओं को पार करते हुए वैश्विक स्तर के विश्वविद्यालयों से उच्चतम डिग्रियां प्राप्त कीं। वे अपना जीवन अन्यायपूर्ण एवं मानव अधिकारों से वंचित जातिबद्ध वर्ण व्यवस्था के विनाश हेतु समर्पित कर देते हैं।

परिवार के किसी सौभाग्य या किसी राजनीतिक वंशावली के बिना ही केवल कमर तोड़ मेहनत, दृढ़निश्चय, उच्चतम साहस एवं स्वार्थहित बलिदान, भेदभाव पर विजय पाते हुए वे आजाद भारत के संविधान निर्माता बन जाते हैं। सकारात्मक सामाजिक रक्षा कवच बनाने के लिए सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीति न्याय जो लाखों करोड़ों पर बहुजन लोगों को न्याय दे सके, की रचना करते हैं। भारत के इतिहास में जितने भी महापुरुष, राजनेता एवं समाज सुधारक हुए हैं, उनमें सबसे अधिक मूर्तियां सम्पूर्ण देश में डा. अम्बेडकर की ही दिखायी देती हैं। इन मूर्तियों में हट्टे–कट्टे नीले सूट और लाल टाई पहने, हाथ में भारतीय संविधान लिए दिखाई देते हैं। उनकी मूर्तियां गांव, शहरों और चौराहों पर दिखाई देती हैं। हर साल 6 दिसम्बर उनके परिनिर्वाण दिवस पर पच्चीस लाख से अधिक लोग बम्बई की चैत्य भूमि पर अपने नायक जिसको वे अपना रक्षक एवं मसीहा के रूप में पूजते हैं, उनको आत्मीय श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित होते हैं। वे एक सफल राजनेता, जननायक, गम्भीर चिन्तक एवं बहुआयामी विद्वान थे। जन आन्दोलनों, राजनीतिक उठापटक को सुलझाते हुए अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास, संस्कृति, राजनीति, मानव शास्त्र, कानून एवं धर्म पर अतुलनीय पुस्तकें लिखीं जो उनके सच्चे बुद्धिजीवी एवं महापुरुष होने का प्रमाण हैं। युग प्रवर्तन करने वाले महापुरुषों के विषय में आम धारणा होती है कि युगपुरुष को एक वर्ग अप्रमोदशील देवता मानते हैं, दूसरा वर्ग नहीं मानता है। बहुजन समाज आजादी चाहता हूं, लेकिन साथ–साथ मेरे बन्धुओं को भी आजादी चाहिए।

सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करने वाले विश्व के महापुरुषों में डा. अम्बेडकर का नाम सबसे ऊंचा है जिन्होंने शक्ति के स्रोतों से पंगा लेकर, गुलाम बनाये गए, शक्तिहीन बनाये गये आदमियों के लिए, अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया। जिनमें अफ्लातून, सैनेका, हाब्स–लॉक, रूसो, मार्क्स, लेनिन, लिंकन, माओ, मार्टिन लूथर किंग, नेलसन मंडेला आदि थे। बाबा साहब का जीवन बड़ा व्यापक, बहुयामी था। परन्तु मनुवादियों ने उन्हें केवल बहुजनों का नेता के रूप में स्थापित करने की कोशिश की। आज के दौर में भारत में सबसे अधिक पुस्तकें, पत्रिकाएं, शोधपत्र उनके विचारों पर प्रकाशित हो रहे हैं। भारत ही नहीं बल्कि नेपाल, चीन, जापान, थाइलैंड अन्य देशों के बहुजन आन्दोलनों में भी बाबा साहब प्रेरणा स्रोत के रूप में काम कर रहे हैं। संघ, भाजपा सरकार इस बात को भलीभांति जानती है कि जब तक इस कायनात में डा. अम्बेडकर का वजूद कायम रहेगा हिन्दू जाति व्यवस्था को चुनौती

सशक्तीकरण कब होगा?

• विनय जायवाल

अपने हक के लिए लड़ने वाली कथित आधुनिक महिलाएं कैसे भूल जाती है कि उन महिलाओं के भी अधिकार हैं जो गरीब–दलित समुदायों और आदिवासी तथा अन्य पिछड़े इलाकों से आती हैं और उनकी अपनी खुद की ख्वाहिशें हो सकती हैं, वे भी उनकी तरह खुले आसमान में उड़ने का हौसला रख सकती हैं। शहरीकरण, एकल परिवारों के बढ़ते चलन और जीवनशैली में बदलाव की वजह से जन्म ले रहे सामाजिक परिवर्तन के बीच भारत में घरेलू कर्मियों की बाबत काफी सुधार और बदलाव की जरूरत है, क्योंकि सरकारी और निजी क्षेत्र दोनों में कार्य करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों की तनख्वाह तो हर साल बढ़ती है लेकिन उस अनुपात में घरेलू सहायक का काम करने वालों का वेतन या पारिश्रमिक लगभग स्थिर रहता है। देश में बाल मजदूरी को रोकने और श्रम के मानकों को लेकर ढेर सारे कानून हैं, लेकिन जरूरत उनके प्रभावी क्रियान्वयन की है।

एक आकलन के अनुसार दलित, आदिवासी और अति पिछड़ी जातियों की लड़कियों के स्कूल छोड़ने की दर इस वर्ग के लड़कों के मुकाबले, अन्य सभी वर्गों के बरक्स, अधिक है। इसी के साथ ही, इनके विवाह की औसत उम्र महज पंद्रह साल है, जिसके चलते इनके भविष्य की सारी संभावनाएं भी शून्य हो जाती हैं। कामकाजी स्तर पर देखें तो दलित, आदिवासी और अति पिछड़ी जातियों की महिलाएं अमूमन 'निचले दर्जे' के कामों में ही कार्यरत हैं जो ऊंचे पदों पर पहुंची हैं उनकी गिनती उंगलियों पर की जा सकती है। पिछड़े वर्ग की महिलाएं सामाजिक बाध्यताओं के चलते घरों में बैठना पसंद करती हैं लेकिन एक स्तर के नीचे के काम के लिए खुद को तैयार नहीं कर पाती हैं। इस तरह सामाजिक स्थिति और आर्थिक बाध्यताएं कामकाजी स्तर को सीधे प्रभावित करती हैं।

इस तरह से जहां यह सच है कि महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और कामकाजी स्थिति तमाम प्रगति तथा बदलावों के बाद भी पुरुषों के मुकाबले बहुत कमतर है, उसी तरह से यह भी सच है कि उच्च सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक स्थिति वाली महिलाओं के मुकाबले दलित, आदिवासी और अन्य पिछड़ी महिलाओं की सामाजिक व कामकाजी दशा बहुत ही शोचनीय है। यह आधी आबादी के अंदर की तीन चौथाई आबादी की व्यथा है। यह व्यथा आर्थिक और कामकाजी स्तर पर ही नहीं, कई और मोर्चों पर भी साफ–साफ देखी जा सकती है। जैसे, न्याय के मोर्चे पर। एक तिहाई से भी अधिक दलित, आदिवासी और अन्य पिछड़े समुदायों की हैं। उनमें से जाने कितनी विचाराधीन कैदी होंगी, क्योंकि जेलों में बंद लोगों में करीब सत्तर फीसद विचाराधीन कैदी हैं, यानी जो अपने ऊपर लगा अभियोग साबित हुए बगैर जेल में सड़ने को अभिशप्त हैं। यह तथ्य दिखाता है कि किस तरह से महिलाओं की बड़ी आबादी की सामाजिक और आर्थिक और कामकाजी अधिकार के साथ–साथ उनके न्यायिक हक को केवल महिला सशक्तीकरण के एक नारे के साथ नहीं लड़ा जा सकता है। सामाजिक स्थिति और आर्थिक वर्ग के आधार पर, सशक्तीकरण की उनकी लड़ाई को मजबूती देनी होगी। •

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र
पढ़ें और आगे बढ़ें।

की स्थिति को सुधारने के लिए जो प्रयत्न किये वे किसी ईश्वर से अधिक थे। कुछ मनुवादी उन्हें झूठा ईश्वर कहते हैं। व्यक्ति को शक्ति और तेज देने वाली तपस्या की राह कभी आसान नहीं होती। बाबा साहब ने कदम–कदम पर अपमान का विष पीने के बाद भी उनके विशाल हृदय में घृणा नहीं उपजी। बाबा साहब सवर्णों एवं ब्राह्मणों के विरोधी नहीं, ब्राह्मणवाद के विरोधी थे। उनका संघर्ष वर्ण व्यवस्था एवं जातिवाद से था। इसलिए उन्होंने इस सारे संघर्ष में सभी जातियों एवं वर्ग के लोग शामिल थे। उनके एक ब्राह्मण शिक्षक कृष्ण जी केलूस्कर ने भीमराव को भगवान गौतम बुद्ध की एक पुस्तक पढ़ने को दी। भीमराव बताते हैं कि मैं जीवन भर केलूस्कर एवं भगवान बुद्ध को भूल नहीं सका।

26 अप्रैल, 1942 को बम्बई में, उन्होंने कांग्रेस के नेताओं को कहा कि मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आजादी के लिए तुम जैसे लड़ रहे हो, आपसे ज्यादा ताकत से लडूंगा, लेकिन मुझको भरोसा तो दिलाओ कि स्वराज में मेरे समाज की क्या भागीदारी होगी? वे कहते थे कि मुझको विश्वास तो दिलाओ कि तुम मेरे बन्धुओं को स्वतंत्र कर दोगे, अगर नहीं तो मैं क्या करूंगा स्वराज का? मैं देश की मिलती रहेगी। इतिहास साक्षी है कि हिन्दू जाति व्यवस्था को चुनौती देने वाली जितनी सामाजिक संस्थाएं बनीं, उसके नायक बहुजन ही थे फिर भी ब्राह्मणवाद के एजेन्टों ने घुसकर, उनके आन्दोलन की धार खत्म करने की कोशिश की। आज के दौर में बहुजन युवा वर्ग सम्पूर्ण देश में सक्रिय हो चुका है। तुम एक तोड़ोगे, दस जन्म ले लेंगे। तुम तोड़ते–तोड़ते थक जाओगे, कुछ नहीं कर पाओगे, बहुजनों द्वारा चलाये जा रहे बाबा साहब के मिशन की धार कम नहीं कर पाओगे।

सामाजिक न्याय और राष्ट्रवाद एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। राष्ट्र का मतलब जन, भूमि और संस्कृति/ जन भूमि के द्वारा संस्कृति का विकास होता है। राष्ट्र बनाने के लिए सांस्कृतिक एकता का होना आवश्यक है। जब समाज विभिन्न जातियों में आपस में बंटा हो तो उनके आदर्श अलग–अलग होंगे तो टकराव होना जरूरी है। बाबा साहब 'भगवान बुद्ध और उनका धम्म' में बताते हैं, धर्म में सामाजिक भेदभाव से उत्पन्न सभी कानून नष्ट कर देने चाहिए। 'ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठ और शूद्र सबसे नीचा होना' से राष्ट्र नहीं बन सकता। राष्ट्र के लिए जैसा मैं, उसी तरह दूसरा होना चाहिए यह विचार खुले दिमाग से स्वीकार करना पड़ेगा।•

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक - श्रीमती त्रिलोचन सुमनाक्षर ❑ व्यवस्थापक : जय सुमनाक्षर, फोन : 27421449, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009